इन्फान्टे डॉन ज़ुआन मैन्युअल

शो खत्म!

सान्तियागो शहर में एक डीन रहा करता था। उसे जादू सीखने की बड़ी इच्छा थी। एक दिन उसे तोलेडो के एक जादूगर के बारे में पता चला। इस उस्ताद जादूगर का नाम था – डॉन इलान। इलान की तलाश में डीन तोलेडो जा पहुँचा।

तोलेडो पहुँचते ही वह सीधे इलान के घर गया। इलान अपने घर के पिछवाड़े के एक कमरे में बैठे पढ़ रहे थे। उन्होंने डीन का आदर के साथ स्वागत किया। और अनुरोध किया कि कुछ खा-पी लेने के बाद ही वह अपने आने का मकसद बताए। एक आरामदेह कमरे में ले जाकर डॉन इलान ने कहा कि वह डीन के आने से बेहद खुश है। भोजन के बाद डीन ने अपने आने का कारण बताया। उसने इलान से जादू की कला सिखाने की चिरौरी की। इस पर इलान ने कहा कि वह जानता है कि उसका मेहमान एक डीन है और उसका भविष्य अच्छा है। और अगर वह अपना ज्ञान उसे सिखा दे तो शायद भविष्य में एक ऐसा समय भी आए जब डीन उसे उचित गुरू-दक्षिणा देने से मुकर जाए। जैसा ऊँचे पदों पर बैठे लोग अक्सर करते हैं। डीन ने कसम खाई कि वह इलान के उपकार को कभी नहीं भूलेगा और हमेशा उसका कहा मानेगा।

जब दोनों में समझौता हो गया तो इलान ने खुलासा किया कि जादू एकदम एकान्त में ही सीखा जा सकता है। उसने डीन का हाथ थामा और उसे अगले कमरे में ले गया। कमरे के फर्श पर लोहे का एक विशाल कुण्डा था। पर इसके पहले उसने अपनी सेविका से कहा कि वह रात के खाने में तीतर पकाए, पर जब तक कहा न जाए उन्हें भूने नहीं।

इलान और डीन ने कुण्डा उठाया और घुमावदार तथा खूब इस्तेमाल की गई सीढ़ियों से नीचे उतर गए। वे इतने गहरे उतरते जा रहे थे कि डीन को लगा कि वे टैगस नदी के पेन्दे तक पहुँच चुके हैं। और नदी अब उनके ऊपर बह रही है। सीढ़ियों के खत्म होने पर एक कोठरी थी, जिसमें कई पुस्तकें और एक अलमारी में जादुई उपकरण रखे थे। दोनों पुस्तकों के पन्ने पलट रहे थे कि अचानक दो व्यक्ति आए। उनके हाथ में एक पत्र था। यह पत्र डीन के चाचा (जो बिशप थे) का था। पत्र से पता चला कि डीन के चाचा गम्भीर रूप से बीमार हैं। और अगर डीन उन्हें ज़िन्दा देखना चाहते हैं तो फौरन लौटें। डीन बड़े अशान्त हुए। एक तो इसलिए कि बिशप बीमार थे, पर इसलिए भी कि जादूविद्या के अध्ययन में यूँ बाधा आ रही थी। आखिर उसने सोच-विचारकर अध्ययन जारी रखना तय किया और बिशप से माफी माँगते हुए एक पत्र उन्हें लिख भेजा।

तीन दिन बाद कई लोग शोकवस्त्र पहने, डीन के लिए कुछ और पत्र लेकर आए। पत्रों में डीन ने पढ़ा कि बिशप की मृत्यु हो गई थी। बिशप के उत्तराधिकारी का चुनाव हो रहा था और इंशाअल्लाह डीन ही शायद उस पद पर चुन लिए जाएँ। खतों में यह भी सुझाया गया था कि बेहतर हो कि वे चुनाव के समय अनुपस्थित रहें।

दस दिन और गुज़र गए। और तब उम्दा वस्त्रों में सजे-धजे दो सामन्त वहाँ आए। वे डीन के पैरों के सामने घुटनों पर झुके, हाथ थामकर उसे चूमा और बिशप कह उसका अभिवादन करने लगे। डॉन इलान यह सब देख खुश हो गए। वे बिशप से बोले कि यह बेहद सुखद बात है कि उनके घर यह शुभ समाचार आया है। इसके लिए वे ईश्वर के शुक्रगुज़ार हैं। साथ ही उन्होंने बिशप से कहा कि अब डीन का जो पद खाली हुआ है वह पद उनके पुत्र को दे दिया जाए। इस पर बिशप महोदय ने कहा कि वे यह पद पहले ही अपने भाई के लिए तय कर चुके हैं, पर चर्च में कोई दूसरा पद वे इलान के बेटे के लिए ज़रूर तलाशेंगे। उन्होंने अनुरोध किया कि वे तीनों ही साथ-साथ सान्तियागो के लिए रवाना हो जाएँ।

वे सान्तियागो शहर की ओर बढ़ चले। वहाँ उनका बड़ी धूमधाम से स्वागत हुआ। छह माह ही बीते थे कि पोप के सन्देशवाहक बिशप के पास आए। उन्होंने बिशप के सामने तोउलूसे के आर्च बिशप का पद सम्भालने का प्रस्ताव रखा।

साथ ही कहा कि बिशप का पद किसे सौंपा जाएगा यह निर्णय भी डीन करेंगे।

जब इलान ने यह समाचार सुना तो डीन को पुराना वादा याद दिलाया और कहा कि बिशप का खाली पद उनके बेटे को दे दिया जाए। आर्च बिशप बोले कि यह पद तो वे अपने पिता के भाई के लिए चुन चुके हैं, पर क्योंकि उन्होंने डॉन इलान पर कृपा करने का वादा किया है, अतः वे अपने पुत्र के साथ तोउलूसे चलें, ताकि बाद में कुछ किया जा सके। आर्च बिशप से सहमत होने के अलावा इलान के पास कोई चारा न था। सो वे प्रस्ताव मान गए।

तीनों तोउलूसे के लिए निकल पड़े जहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ। प्रार्थना सभाएँ आयोजित हुईं। दो-चार वर्ष और बीत गए। इस बीच पोप की मृत्यु हो गई। शेष सभी कार्डिनलों ने मिलकर हमारे इन्हीं डीन को पोप चुन लिया। यह समाचार सुन इलान ने पवित्र पोप के चरण चूमे और उन्हें उनके वादे की याद दिलाई। इलान ने कोर्डिनल का रिक्त पद अपने पुत्र के लिए माँगा। पोप महोदय बोले कि वे डॉन इलान की लगातार की जाने वाली माँगों से आज़िज़ आ चुके हैं, और अगर वे ऐसे ही अवसर तलाशते रहेंगे तो वे उन्हें जेल में ठुँसवा देंगे।

बेचारे डॉन इलान सिर्फ यही कह पाए कि वे स्पेन लौटना चाहेंगे और उन्होंने पोप से लम्बी समुद्री यात्रा के दौरान खाने के लिए कुछ माँगा। पोप ने यह करने से भी मना कर दिया। इस पर डॉन इलान ने (जिनका चेहरा अचानक बदल गया था) स्थिर आवाज़ में कहा, "फिर तो मुझे वे तीतर ही खाने होंगे जो मैंने आज रात के लिए पकाने को कहा था।"

सेविका सामने आई और इलान ने तीतर भूनने की आज्ञा दी। अचानक पोप महोदय ने पाया कि वे तोलेडो की भूमिगत कोठरी में हैं। और हाँ, सान्तियागो के डीन के ही पद पर हैं। डीन इतने शर्मसार हुए कि कहने को कुछ सूझा ही नहीं।

डॉन इलान ने कहा कि यह परीक्षा पर्याप्त थी। उन्होंने डीन को तीतर तो नहीं ही खिलाए दरवाज़े का रास्ता ज़रूर दिखा दिया। फिर पूरे शिष्टाचार के साथ उनकी यात्रा के लिए शुभकामनाएँ देकर विदा कर दिया। चकमक

अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा